डॉ अंबेडकर का आधुनिक भारत में “नव बौद्ध यान धर्म” के रूप में पुनरुत्थान

डॉ शालिनी सिंघल,

(सह-प्राध्यापक, इतिहास विभाग)

कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज,

दिल्ली विश्वविद्यालय

Abstract:

Dr. B.R. Ambedkar, during the mid-20th century, spearheaded revolutionary changes in modern India against the caste system, casteism, racism, religious rituals, Brahmanical dominance, communalism, and untouchability. His efforts led to the welfare of marginalized communities, including the Shudras, Dalits, oppressed classes, indigenous people, and the socially backward. He inspired society to work towards freedom, equality, and fraternity.

Ultimately, on October 14, 1956, Dr. Ambedkar renounced Hinduism and, along with his followers, embraced Buddhism. He established Neo-Buddhism, a modern adaptation of Buddhist philosophy.

This research paper aims to examine the ideas of Buddha's Buddhist philosophy and Ambedkar's Neo-Buddhist movement, focusing on their contributions to social reform and the structural transformation of society.

सारांश:

डॉ अंबेडकर ने 20वी शताब्दी के मध्य आधुनिक भारत में वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, नस्लवाद, धार्मिक कर्मकांड, ब्राह्मण वाद, सांप्रदायिकता वाद, छुआछूत के खिलाफ आमूलचूल परिवर्तन लाए थे। जिससे लाखों शूद्रों, दलितों, शोषितों, आदिवासियों, पिछड़ों का कल्याण हुआ और समाज को स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। अंततः 14 अक्तूबर, 1956 को हिन्दू धर्म त्याग कर लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए और नव बौद्ध यान धर्म की स्थापना की। इस प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से भगवान बुद्ध के बौद्ध धर्म एवं अम्बेडकर के नव बौद्ध यान धर्म के विचारों को दृष्टिगत करके उनके द्वारा सामाजिक संरचना के लिए अंगीकार किये गये विचारों का अध्ययन किया गया हैं।

मुख्य शब्द:

डॉ अंबेडकर, वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, छुआछूत, दलित, नव बौद्ध यान धर्म, धम्म ।

डॉ अंबेडकर के जीवन की संघर्ष यात्रा भावी पीढ़ी के लिए अति प्रेरणादायी हैं। डॉ अंबेडकर ने किस प्रकार बचपन से कठोर वर्ण व्यवस्था, घोर जाति प्रथा, छुआछूत, अमानवीय व्यवहार, असमाजिकता का दंश झेल चुके थे, जिसे स्वयं ने कटु अनुभव किया था। भारतीय समाज में व्याप्त असमानता और जातिवाद के चरम दौर में डॉ भीमराव अंबेडकर का अवतरण किसी क्रांति और अभ्युदय से कमतर नहीं आंका जा सकता। अन्यथा तो दलित वर्ग के बच्चों के लिए स्कूल में पानी के नल को हाथ लगाना भी वर्जित माना जाता था। अंबेडकर के हृदय में समाज की इस विचित्र और अन्यायपूर्ण

व्यवस्था को लेकर बाल्यकाल से ही आक्रोश था। शनैः शनैः उम्र और ज्ञान के साथ उनके आक्रोश की अग्नि और भी तेज होने लगी। बाबासाहेब ने हिन्दू समाज को सुधारने, समता तथा सम्मान प्राप्त करने के लिए तमाम प्रयत्न किए, परन्तु सवर्ण हिन्दुओं का ह्रदय परिवर्तन न हुआ। किन्तु इसके विपरीत उन्हें निंदित किया गया, देशद्रोही कहा गया और यहाँ तक कि उन्हें हिन्दू धर्म विनाशक कहा गया। तभी बाबासाहेब ने कहा था – "हमने हिन्दू समाज में समानता का स्तर प्राप्त करने के लिए हर तरह के प्रयत्न और सत्याग्रह किए, परन्तु सब निरर्थक सिद्ध हुए। हिन्दू समाज में समानता के लिए कोई स्थान नहीं है।"

परिणामस्वरूप, डॉ भीमराव अंबेडकर ने 13 अक्टूबर, 1935 को नासिक जिले के येओला में दलित वर्ग सम्मेलन में घोषणा की कि *"मेरा जन्म एक हिंदू के रूप में हुआ हैं लेकिन मैं एक हिंदू के रूप में मरुंगा नहीं।"* इसके अगले साल यानी 1936 में उन्होंने महार सम्मेलन के दौरान एक और भाषण दिया। जो 'मुक्ति कोण पथे' यानी 'मुक्ति का मार्ग क्या है' इस नाम से छपा। इस भाषण में उन्होंने सिलसिलेवार रुप से तर्क दिए कि दलितों को अपना धर्म बदलने की ज़रुरत क्यों है? डॉ अंबेडकर के इस ऐलान को करने भर की देर थी कि अलग-अलग धर्मों के प्रतिनिधि उन्हें लोकलुभावन प्रस्ताव देने लगे जिनमें क्रमशः सिख पंथ, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म इत्यादि। चूंकि बाबासाहेब ने ये घोषणा कोई जल्दबाजी में नहीं की थी बल्कि बहुत सोच विचार कर यह निर्णय लिया था।

हिन्दू समाज का यह भी कहना था कि "मनुष्य धर्म के लिए है" जबकि बाबासाहेब का मानना था कि मनुष्य धर्म के लिए नहीं है बल्कि धर्म मनुष्य के लिए होना चाहिए। बाबासाहेब ने कहा कि ऐसे धर्म का कोई मतलब नहीं जिसमें मनुष्यता का कुछ भी मूल्य नहीं हो। जो धर्म शिक्षा प्राप्त नहीं करने देता, नौकरी करने में बाधा पहुँचाता है, बात-बात पर अपमानित करता है और यहाँ तक कि पानी तक नहीं मिलने देता ऐसे धर्म में रहने का कोई मतलब नहीं। बाबासाहेब ने हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा किसी भी प्रकार की दुश्मनी व हिन्दू धर्म के विनाश के लिए नहीं की थी बल्कि उन्होंने इसका फैसला कुछ मौलिक सिद्धांतों को लेकर किया जिनका हिन्दू धर्म में बिल्कुल तालमेल नहीं था।

बाबासाहेब के धर्म-परिवर्तन की घोषणा के बाद हैदराबाद के मुस्लिम धर्म के निजाम से लेकर कई ईसाई मिशनरियों ने उन्हें करोड़ों रुपये का प्रलोभन भी दिया पर उन्होंने सभी को ठुकरा दिया। निःसंदेह वे भी चाहते थे कि दलित

समाज की आर्थिक स्थिति में सुधार हो, पर पराए धन पर आश्रित होकर नहीं बल्कि उनके परिश्रम और संगठन होने से स्थिति में सुधार आए। इसके अलावा बाबासाहेब ऐसे धर्म को चुनना चाहते थे जिसका केन्द्र मनुष्य और नैतिकता हो, उसमें स्वतंत्रता, समता तथा बंधुत्व हो। वे किसी भी हाल में ऐसे धर्म को नहीं अपनाना चाहते थे जो वर्णभेद तथा छुआछूत की बीमारी से जकड़ा हो और ना ही वे ऐसा धर्म चुनना चाहते थे जिसमें अंधविश्वास तथा पाखंड वाद हो।

डॉ अंबेडकर बौद्ध धर्म को पसंद करते थे क्योंकि उसमें तीन सिद्धांतों का समन्वित रुप मिलता है जो किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। बौद्ध धर्म प्रज्ञा, करुणा, और समता की शिक्षा देता है। उनका कहना था कि मनुष्य इन्हीं बातों को शुभ तथा आनंदित जीवन के लिए चाहता है। देवता और आत्मा समाज को नहीं बचा सकते।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत की आजादी के बाद 14 अक्तूबर, 1956 को डॉ बी आर अंबेडकर और लगभग 4-5 लाख समर्थकों द्वारा नागपुर (महाराष्ट्र) में बौद्ध धर्म की दीक्षा ली गयी और बाबा साहब ने इन्हें नव बौद्ध कहा तथा बौद्ध धर्म के नए रुप को नाम दिया 'नवयान'।

नवयान का अर्थ है– "नया मार्ग" या "शुद्ध वाहन"। इसके अनुयायी "अम्बेडकरवादी बौद्ध" होते हैं, हालांकि अपनी मृत्यु से तकरीबन दो माह पहले और दीक्षा लेने से एक सप्ताह पहले 06 अक्तूबर, 1956 को नागपुर के एक होटल में डॉ भीमराव अंबेडकर ने घोषणा की थी कि "मैं बुद्ध के सिद्धांतों को मानता हूं और उनका पालन करूंगा। मैं अपने लोगों को दोनों संप्रदाय हीनयान और महायान के विचारों से दूर रखूँगा। हमारा बौद्ध धर्म नया है 'नवयान'।"

डॉ अंबेडकर को बौद्ध धर्म में विश्वास करने का महत्वपूर्ण कारण यह भी हैं कि वे लिखते हैं- 'बुद्ध ने एक साधारण मानव के रुप में जन्म लिया और अपने अथकनीय पराक्रम से एक असाधारण पुरुष बने रहने पर संतुष्ट रहे और लोक कल्याण के लिए धर्म का प्रचार करते रहे। उन्होंने कभी किसी अलौकिक शक्ति का दावा नहीं किया और न ही अपनी किसी अलौकिक शक्ति को सिद्ध करने के लिए चमत्कार दिखाए। बुद्ध ने मार्ग-दाता और मुक्ति-दाता में स्पष्ट भेद किया।' बुद्ध कहते हैं कि मैं मार्गदाता हूँ, मुक्तिदाता नहीं। बुद्ध धम्मपद में कहते हैं-

"तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता।

पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारबन्धना।।"

अर्थात् कार्य के लिए तुम्हें ही उद्योग करना है, तथागत का कार्य तो मार्ग आख्यात करना है। मार्ग पर आरुढ हो, ध्यान में रत, (पुरुष) के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

परंतु इसके विपरीत ईसा, पैगंबर मुहम्मद और कृष्ण ने अपने को मोक्ष-दाता होने का दावा किया, जबकि बुद्ध केवल मार्ग-दाता होने पर ही संतुष्ट थे। डॉ. अंबेडकर ऐसा कोई भी धर्म स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, जिसमें ईश्वर या ईश्वर के बेटे, पैगम्बर या खुद ईश्वर के अवतार के लिए कोई जगह हो। उनके गौतम बुद्ध एक मानव हैं और बौद्ध धर्म एक मानव धर्म, जिसमें ईश्वर के लिए कोई जगह नहीं है। डॉ अंबेडकर के शब्दों में बुद्ध कहते हैं:-

अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति।

तस्मा संज्जम' त्तानं, अस्सं भद्र व वाणिजो ।।

अर्थात् मनुष्य स्वयं अपना मालिक हैं, अपने हाथों स्वयं ही अपना गति बनाता हैं। इसलिए तुम अपने आप को संयम में रखो, वैसे ही जैसे अच्छे घोडों का व्यापारी अपने घोड़ों को करता हैं।

यह कथन बाबासाहेब के लिए बहुत ही प्रेरणादायी थी। जिसे स्व स्तर पर मूल्यांकन किया।

इस तरह डॉ बाबासाहेब अंबेडकर ने लगातार 21 वर्षों तक विभिन्न धर्मों का गूढ़ रुप से अध्ययन किया और नव बौद्ध यान धर्म के रुप में प्रवर्तित किया जिसे नव बौद्ध यान धर्म भी कहा जाता है। यह धर्म डॉ अंबेडकर और आने वाली पीढ़ियों को नवीन रुप से, स्वतंत्र रुप से सोचने, समझने और आजादी से जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। जिसमें भाईचारा, स्वतंत्रता, समानता प्रदान कर नई वैज्ञानिक सोच और तार्किकता को विकसित करता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ. अंबेडकर, भगवान बुद्ध और उनका धर्म, बुद्ध भूमि प्रकाशन, नागपुर, अनुवाद भदंत आनंद कौसल्यायन,1997
2. प्रभाकर वैद्य, डॉ० आम्बेडकर आणि त्यांचा धम्म, 2000
3. धम्मपद, 276, विपश्यना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी, नासिक
4. धम्मपद, 380, विपश्यना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी, नासिक

5. सुत्तपिटक – अंगुत्तरनिकाय - तिकनिपात पाळि (66) - महावग्ग – केसमुत्ति सुत
6. मेरी जीवन-यात्रा-2, राहुल सांस्कृत्यायन, (पृ.19), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2002
7. धनंजय कीर, डॉ बाबा साहब अंबेडकर: लाइफ एण्ड मिशन, पॉपुलर प्रकाशन
8. डॉ. डी आर जाटव, डॉ अंबेडकर का राजनीति दर्शन, समता साहित्य सदन, जयपुर
9. डॉ विजयकुमार पुजारी, बाबा साहब अंबेडकर: जीवन दर्शन, प्रकाशक भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली प्रदेश
10. बाबा साहेब डॉ अंबेडकर सम्पूर्ण वांड़मय, पृ सं- 54
11. "डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा?" नवभारत टाइम्स ब्लॉग, 26 जून 2015
12. Mahabodhi and United Buddhist World, Vol-40, P-392 published-1931
13. चंद्रभान प्रसाद दलित, "क्या मनुस्मृति दहन दिन मनाएगा संघ?" BBC News हिंदी. मूल से 28 जून 2018
14. "इसलिए बाबा अंबेडकर ने लाखों दलितों के साथ अपनाया था बौद्ध धर्म!". https://m.aajtak.in. मूल से 2 अगस्त 2018